फ़िजी-संदेश

संपादक

प्रो. जयन्त कर शर्मा

भारत ने दुनिया को गिनना सिखाया है। आत्मनिर्भरता के स्तर पर भारत को आगे बढ़ना है तो पारंपरिक ज्ञान बहुत आवश्यक है। प्राचीन ज्ञान को आधुनिक तकनीक से जोड़ने की जरूरत है। 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020' में भी यही बात कही गई है। भारतीय ज्ञान-परंपरा को आज के संदर्भ में ढालने की जरूरत है। आज पारंपरिक ज्ञान और टेक्नोलॉजी कदम मिलाकर चल रही हैं। हिंदी कृत्रिम मेधा के साथ-साथ काम करने में सक्षम है क्योंकि कंप्यूटर हिंदी भाषा को पहचानता है। इसका उदाहरण एलेक्सा और रोबोट हैं। यह ज्ञान-विज्ञान के सभी माध्यमों में कार्य करने का सशक्त माध्यम है। भारत विश्व स्तर पर मजबूत हो रहा है। जब कोई देश मजबूत होता है तो उसकी भाषाएँ भी सशक्त होती हैं। आज पूरी दुनिया एक परिवर्तन से गुजर रही है, जिसमें डिजिटल क्रांति की अहम् भूमिका है। हमारे प्रधान मंत्री कृत्रिम मेधा के क्षेत्र में ग्लोबल हब बनाने की बात कर चुके हैं। फ़िजी में आयोजित 12वाँ विश्व हिंदी सम्मलेन का मुख्य विषय भी यही रहा है। पारंपरिक ज्ञान समर्थ भाषा और समर्थ तकनीक सब तक पहुँच, यही इस सम्मलेन का उद्देश्य रहा है। 12वें विश्व हिंदी सम्मलेन की थीम सामयिक तथा दूरदर्शितापूर्ण है। चूँकि इसका प्रयोग हिंदी के सबसे बड़े वैश्विक आयोजन में हो रहा है इसलिए उम्मीद की जानी चाहिए कि फ़िजी का विमर्श एक शृंखला में तब्दील होगा तथा हिंदी बोलने और लिखने वाले समाज के भीतर व्यापक स्तर पर वैज्ञानिक मानस के प्रसार में योगदान देगा। प्रस्तुत कृति 'फ़िजी-संदेश' इसी सोच को परिभाषित एवं व्याख्यायित करती है।

–पुरोवाक् से

फ़िजी-संदेश

संपादक

प्रो. जयन्त कर शर्मा

प्रज्ञा भारती

दिल्ली-110032

फ़िजी-संदेश

सम्पादक : प्रो. जयंत कर शर्मा

प्रकाशक

प्रज्ञा भारती

1/11314, गली नं. 4, सुभाष पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110032

E-mail : **pragyabhartiprakashan9786@gmail.com**

Website : www.pragyabhartiprakashan.com

मो. 8989154228, 9319797717, 8178129668

मुद्रण : भारत

मुद्रक : पूजा ऑफसेट, दिल्ली—110032

आवरण : छबिल कुमार मेहेर

प्रथम संस्करण : 2024

मूल्य : 450.00

ISBN : 978-81-960947-3-7

कॉपीराइट : संपादक एवं लेखक गण

इस पुस्तक का सर्वाधिकार (कॉपीराइट) सुरक्षित है। विज्ञ पाठक/आलोचक/विशेषज्ञ द्वारा इस पुस्तक की समीक्षा के अलावा, लेखक/संपादक की लिखित अनुमति के बिना इसके पुनर्प्रकाशन, मंचन या इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से इसे पुनरुत्पादित-संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता। पुस्तक में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।

FIZI-SANDESH

Edited by : Prof. Jayanta Kar Sharma

अनुक्रम

पुरोवाक् —*प्रो. जयंत कर शर्मा* 05

- फ़िजी और हिंदी —*डॉ. मेनका त्रिपाठी* 13
- वैश्विक परिदृश्य में हिंदी की स्थिति —*डॉ. राजेन्द्र घोडे* 22
- फ़िजी में हिंदी —*प्रो. प्रतिभा जी. येरेकार* 26
- हिंदीत्तर प्रांतों में हिंदी (महाराष्ट्र के विशेष संदर्भ में) —*डॉ. जयश्री शिंदे* 33
- प्रवासी हिंदी साहित्य की अवधारणा और फ़िजी का हिंदी साहित्य —*प्रो. जयंत कर शर्मा* 40
- भारत की हिन्दी फ़िजी की बिंदी —*डॉ. मनीष गोहिल* 53
- भारतीय ज्ञान-परम्परा का स्रोत "सांगोपांग वैदिक वाङ्मय" : सामान्य परिचय —*डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'* 61
- राष्ट्रवाणी का शाश्वत सेतु हिंदी —*डॉ. प्रज्ञा शुक्ल* 73
- साहित्यिक-सांस्कृतिक परिपार्श्व और फ़िजी —*डॉ. नयना डेलीवाला* 79
- हिंदी की वैश्विकता और भारतीय संस्कृति की अस्मिता —*डॉ. के. श्रीलता* 89
- हिंदी भाषा के विकास में प्रौद्योगिकी की भूमिका —*मारुति शुक्ला* 95
- लोक साहित्य के सन्दर्भ में आदिवासी लोक कलाएँ एवं विचार —*प्रो. बलराम गुप्ता* 100
- भारतीय साहित्य एवं संस्कृति में हिंदी —*डॉ. शोभा रतूड़ी* 119
- भारतीय ज्ञान-परम्परा में हिंदी —*श्री ओमप्रकाश रतूड़ी* 133
- अनुवाद-माहात्म्य और शिक्षा —*डॉ. बापूराव देसाई* 141
- 12वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन–2023 —*मधु खन्ना* 148

भारतीय ज्ञान परम्परा का स्रोत "सांगोपांग वैदिक वाङ्मय" : सामान्य परिचय

डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'

"वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है और वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" --महर्षि दयानंद सरस्वती

भारत की नई शिक्षा नीति का प्रारूप सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक एवं पूर्व इसरो प्रमुख डॉ. के. कस्तूरीरंजन जी की अध्यक्षता में गठित विशेषज्ञों की समिति ने बनाया जिसे 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020' के रूप में हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी, पूर्व मानव संसाधन मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर जी, पूर्व शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी और वर्तमान शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी ने स्वीकार कर लागू किया है। अंग्रेजी मानसिकता से छुट कर शिक्षा को पहली बार भारत केंद्रित शिक्षा बनाने का प्रयास किया है।

यह भारत केंद्री शिक्षा सांगोपांग वैदिक वाङ्मय के आधार पर ही क्रियान्वित हो सकती है। क्योंकि सांगोपांग वैदिक वाङ्मय ही भारत की आत्मा है। वैदिक संस्कृत भाषा में उपलब्ध सांगोपांग वैदिक वाङ्मय ही भारतीय संस्कृति को जानने का सबसे बड़ा प्रमाण है। हम इस वर्ष जिनकी दो सौ वीं जन्म जयन्ती मना रहे हैं, उन महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने आर्य समाज के नियमों में ही यह बात कही है कि, वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है और वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। परन्तु दुर्देव से हम सांगोपांग वैदिक वाङ्मय के बारे में बहुत कम जानते हैं।

इस शोधालेख के माध्यम से हम यह प्रयास कर रहे हैं कि सांगोपांग वैदिक वाङ्मय का संक्षेप के परिचय प्राप्त हो जाये। किसी देश की संस्कृति का पूरा ज्ञान

हम उसके साहित्य से ही कर सकते हैं। जिस देश का साहित्य जितना प्रौढ़, गम्भीर और विस्तृत होता है उसकी संस्कृति भी उतनी ही उच्च मानी जाती है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है अर्थात् साहित्य द्वारा हम किसी जाति की सभ्यता, संस्कृति, सम्पत्ति, उदारता आदि का सम्यक् ज्ञान पा सकते हैं। भारतवर्ष की जो प्रतिष्ठा आज विश्व में है अधिकांशतः वह उसके प्राचीन साहित्य पर ही अवलम्बित है। प्रायः सबों ने यह स्पष्ट रूप से स्वीकार कर लिया है कि संसार का सर्वप्रथम साहित्य भारत में ही वेदों के रूप में अवतीर्ण हुआ।

वेदों पर भारतवर्ष को गौरव है। ऋषियों ने उनकी प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रखने के लिए सैकड़ों वर्ष तक उन्हें मौखिक रूप में रखा, प्रत्येक कर्म में उनका पाठ अनिवार्य हो गया तथा 'स्वाध्यायोऽध्येतव्यः' का स्वरोद्घोष भी किया गया। पीछे का समस्त भारतीय वाङ्मय किसी-न-किसी रूप में वैदिक-साहित्य का ऋणी है। धर्म, दर्शन, विज्ञान आदि विभिन्न विषयों की उत्पत्ति के लिए हम वैदिक-साहित्य का ही आलोडन करते हैं। वेदों का अर्थ ही है ज्ञान का समूह (विदु=ज्ञान)। आज वेदों का अध्ययन विद्वान् लोग न केवल धर्म-कर्म आदि के ज्ञान के लिए करते हैं प्रत्युत उनके आधार पर प्राचीन सभ्यता, आर्यों की मूल भाषा, मानव का इतिहास आदि विषयों का भी पता लगाते हैं।

यद्यपि वेदों से 'मन्त्रब्राह्मणात्मकः शब्दराशिर्वेदः' (आप. परि. 31) के अनुसार केवल मन्त्र-भाग और ब्राह्मण-भाग का ही ग्रहण प्राचीन आचार्यों ने किया है किन्तु उनका यह लक्षण केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित था, अतएव पाश्चात्य गवेषकों ने भाषा के आधार पर वैदिक और लौकिक संस्कृत का भेद देखकर वैदिक भाषा में लिखे गये समस्त साहित्य को 'वैदिक' नाम से अभिहित किया है। इस प्रकार वे वैदिक-साहित्य को चार खण्डों में (भाषा के अनुसार कालों में) बाँटते हैं—संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद्। संहिता-भाग में मन्त्रों का संग्रहमात्र है और ये सबसे अधिक प्राचीन हैं। ब्राह्मण भाग मन्त्रों का याजिक उपयोग बतलाता है; यह अधिकांशतः गद्य में है। आरण्यकों और उपनिषदों में दार्शनिक भावना उद्भूत हुई है, इनमें ऋषियों के ईश्वर, संसार और जीव-सम्बन्धी आध्यात्मिक विचारों का गद्य-पद्यात्मक वर्णन है।

संहिता-भाग के भी चार खण्ड हैं—ऋक्, यजुः, साम और अथर्व जिनमें प्रत्येक से सम्बद्ध ब्राह्मण-अरण्यक उपनिषद् अलग-अलग हैं। उस समय तक लेखन कला का आविष्कार न होने के कारण इन्हें कण्ठस्थ ही रखा गया और विभिन्न कुलों में भिन्न-भिन्न रूप से पाठ होने के कारण इनकी कई शाखायें हो गईं। फिर भी

प्रत्येक शाखा के अपने-अपने ब्राह्मणादि निश्चित थे। कालान्तर में बहुत-सी शाखायें लुप्त हो गईं। पतञ्जलि ने ऋग्वेद की 21, सामदेव की 1000, यजुर्वेद की 101 और अथर्ववेद की 9 शाखाओं का उल्लेख किया है। एकशतमध्वर्युशाखाः, सहस्रवर्मा सामवेदः, एकविंशतिधा बाहु वृच्यं नवधाऽथर्वणो वेदः। इनमें प्रत्येक शाखा स्वतन्त्र रूप से वेद है।

वेद संहिता—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद
विनियोग के अंग—देवता, ऋषि, छंद
वेदपाठ विधियाँ—प्रकृति पाठ—संहिता पाठ, पद पाठ, क्रम पाठ (3)
विकृति पाठ—जटा पाठ, माला पाठ, शिखा पाठ, रेखा पाठ,
ध्वज पाठ, दंड पाठ, रथ पाठ, घन पाठ (8)
उपवेद—ऋग्वेद—आयुर्वेद
यजुर्वेद—धनुर्वेद
सामवेद—गांधर्ववेद
अथर्ववेद—शिल्पवेद/ स्थापत्यवेद/ अर्थवेद
शाखाएँ—ऋग्वेद—21
यजुर्वेद—101 (शुक्ल—15, कृष्ण—86)
सामवेद—1000
अथर्ववेद—9

ऋग्वेद—ऋग्वेद में ऋचाओं का संग्रह है तथा समस्त वैदिक साहित्य में यह सबसे बड़ा है। इसकी केवल एक शाकल-शाखा ही इस समय उपलब्ध है। अन्य सभी वेदों में इसके मन्त्र संगृहीत हैं। ऋग्वेद के विभाजन की दो प्रणाली हैं—अष्टक-अध्याय-वर्ग तथा मण्डल-सुक्त-अनुवाक। तदनुसार यह आठ अष्टकों या दस मण्डलों में विभक्त है। पिछला विभाजन ऐतिहासिक है, अतएव सभी आधुनिक विद्वान् ऋग्वेद के उद्धरण देते समय इसी प्रणाली का आश्रय लेते हैं। ऋग्वेद के प्रथम तथा दशम मण्डल अर्वाचीन हैं जिसे भाषा, देवता आदि के आधार पर सिद्ध किया जाता है। ऋग्वेद में 10 मंडल, 85 अनुवाक्, 1028 सूक्त और 10552 मन्त्र (ऋचाएँ) हैं। इसकी 21 शाखाएँ—प्रमुख 5 शाखाएँ—शाकल, बाष्कल, आश्वलायन, शांखायन और माण्डुकायन।

यजुर्वेद—यजुर्वेद के दो भेद हैं—शुक्ल एवं कृष्ण। शुक्ल यजुर्वेद में केवल मन्त्रों का संग्रह है, विनियोग-वाक्यों का नहीं। इसकी संहिता वाजसनेयी-संहिता कहलाती है (40 अध्याय) जिसकी दो प्रधान शाखायें—माध्यन्दिन (उत्तर भारत) और

काण्व (दक्षिण) हैं। कृष्ण-यजुर्वेद में मन्त्रों के साथसाथ विनियोग-वाक्य भी हैं। इसकी चार शाखायें प्राप्त हैं–तैत्तिरीय (अष्टक–प्रश्न-अनुवाक में विभक्त), मैत्रायणी, काठक तथा कठ-कापिष्ठल संहितायें। दोनों यजुर्वेद प्रायः गद्य में हैं जो वैदिक साहित्य का प्रथम गद्य है। इसमें 40 अध्याय, 1975 मन्त्र हैं। इसकी 101 शाखाएँ जिनमें प्रमुख 6 शाखाएँ हैं–शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन और काण्व तथा कृष्ण यजुर्वेद की तैतरीय, मैत्रायणी, कठ और कपिष्ठल।

सामवेद–केवल 75 मन्त्रों को छोड़कर सामवेद संहिता के सभी मन्त्र ऋग्वेद से लिये गये हैं जिनमें अधिकांश नवम-मण्डल (सोमविषयक) के हैं। सामवेद के पूर्वाचिक और उत्तराचिक दो भाग हैं, जिनमें सभी मन्त्र संगीत के योग्य हैं। सामगान में सात स्वरों का उपयोग होता है। इसमें 75 एकक, 1875 मन्त्र (साम),इसकी 1000 शाखाएँ हैं जिनमें से प्रमुख 3 शाखाएँ कौथूमीय, राणायणीय और तवलकार हैं।

अथर्ववेद–अथर्ववेद में अभिचार मन्त्र संगृहीत हैं तथा यह बीस काण्डों में विभक्त हैं, जिनके भीतर क्रमशः प्रपाठक, अनुवाक, सूक्त और मन्त्र सन्निविष्ट हैं। इसके बारह सौ मन्त्र ऋग्वेद से लिये हुए हैं। इसमें 20 काण्ड, 730 सूक्त, 5987 मन्त्र हैं। इसकी 9 शाखाएँ हैं जिनमें प्रमुख 2 शाखाएँ–पैप्पलाद और शौनकीय।

इनमें प्रत्येक वेद के अपने-अपने ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् हैं जिनकी गणना इस प्रकार हो सकती है–

ऋग्वेद–

ब्राह्मण–ऐतरेय, शांखायन और कौषीतकी
आरण्यक–ऐतरेय और कौषीतकी
उपनिषद्–ऐतरेय, कौषीतकी और मांडूक्य

यजुर्वेद–

ब्राह्मण–शतपथ और तैत्तिरीय
आरण्यक–बृहदारण्यक और मैत्रायणी
उपनिषद्–ईश, बृहदारण्यक, तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वेतर

सामवेद–

ब्राह्मण–तांड्य, षड्विंश, सामविधान, जैमिनीय, वंश, मन्त्र, आर्षेय
आरण्यक–जैमिनीय, तवलकार
उपनिषद्–केन, छान्दोग्य

अथर्ववेद–

ब्राह्मण–गोपथ

आरण्यक–

उपनिषद्–प्रश्न, मुण्डक

वेदाङ्ग–इन सबों को ठीक-ठीक समझने एवं तदनुसार कार्य-कलाप का संचालन करने के लिए वेदाङ्ग-ग्रन्थों की आवश्यकता होती है जो शरीर के अङ्गों के समान ही वेद के अनिवार्य भाग हैं। ये अङ्ग हैं– शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष और निरुक्त। इन सबों का विभाजन पाणिनि-शिक्षा (41-42) में इस प्रकार है–

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ॥41॥
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ॥42॥

(1) शिक्षा–स्वर वर्ण आदि के उच्चारण का नियम बतलाने वाली विद्या ही शिक्षा है। उदात्त, अनुदान तथा स्वरित इन तीनों स्वरों के उच्चारण किस प्रकार से हो, इसे बतलाना ही शिक्षा का प्रधान कार्य है। स्वरों के अत्यद से ही बड़े-बड़े हो जाते हैं जैसा कि हम इन्द्रशत्रु के वृत्तान्त से जानते हैं।

मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्ती न तमर्थमाह।
स वाग्बच्यो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोपराधात्।। (पा.शि. 5.2)

शुक्राचार्य वृत्रासुर को इन्द्र-नाश के लिए यज्ञ करा रहे थे। उन्होंने मन्त्र पढ़ा इन्द्रशत्रुर्वर्धस्व स्वाहा। उनका अभिप्राय था कि हे! इन्द्र के नाशक (शत्रु)! तुम उत्पन्न हो, बढ़ो। ऐसी दशा में तत्पुरुष समास (अन्त का अक्षर उदात्त) होता, किन्तु भ्रमवश उन्होंने पूर्व पद के अनुसार स्वर रख दिया जो बहुव्रीहि समास में होता है। फलतः अर्थ हुआ–इन्द्र शत्रु (नाशक) है जिसके इस तरह वृत्र हो मारा गया। स्वर के लिए देखें–पा. सू. 'समासस्य' (6।1।223), 'बहुव्रीही प्रकृत्य पूर्वपदम्' (6।2।1)।

शिक्षा का अध्ययन एक प्रकार से आधुनिक विज्ञान (Phonology) का अध्ययन है जिसमें उच्चारण के स्थान, वर्ण, स्वर, मात्रा (हर्स्व, दीर्घ, प्लुत), शुद्ध उच्चारण के नियम तथा सन्धि का अध्ययन होता है। उच्चारण के लिए पाणिनि-शिक्षा कहती है कि जिस प्रकार बिल्ली अपने बच्चों को दाँत से पकड़ती है, न तो दाँत ही गड़ते हैं और न तो गिरने का ही डर है–सन्तुलन से उसी प्रकार अक्षरों का उच्चारण करें।'

व्याघ्री यथा हरेत्सुत्रान्दन्ष्ट्राभ्यां न च पीडयेत्।
भीता पतनभेदाभ्यां तद्वद्वर्णान्प्रयोजयेत् ॥25॥

उस काल में ध्वनि विज्ञान की इस प्रकार की उन्नति किसे चकित नहीं करती? शिक्षा के प्राचीनतम ग्रन्थ प्रातिशाख्य के रूप में मिलते हैं जो सभी वेदो के भिन्न-भिन्न हैं जैसे—शौनक का ऋषप्रातिशाख्य कात्यायन का शुक्लयजुःप्रातिशाख्य, सामवेद का पुष्पसूत्र, तेलिरोय-प्रातिशाख्य तथा अथर्व-प्रातिशाख्य आदि। इन सबों में सूत्र के रूप में उपर्युक्त विषय समझाये गये हैं। शिक्षा ग्रन्थों में पाणिनि तथा याज्ञवल्क्य की शिक्षा में बहुत प्रसिद्ध है जो श्लोकबद्ध है। उच्चारण का विश्लेषण करने के लिए आधुनिक युग में यन्त्र बन गये हैं किन्तु उस युग में इनके अभाव में भी शिक्षाकारों ने वर्णों के स्थान और यत्न जान लिये थे जो आज भी प्राय मान्य हैं। ऋक्प्रातिशाख्य, वाजसेनीय प्रातिशाख्य, तैत्तिरीय प्रातिशाख्य, पुष्प सूत्र प्रातिशाख्य, अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य तथा पाणिनीय शिक्षा, नारदीय शिक्षा, याज्ञवल्क्य शिक्षा, व्यास शिक्षा, पराशरी शिक्षा, वासिष्ठी शिक्षा, कात्यायनी शिक्षा आदि 34 शिक्षा ग्रन्थ।

(2) कल्प—वैदिक कर्मकाण्ड का विस्तार देखकर उसे सूत्रबद्ध करने की इच्छा से ही कल्प का आविर्भाव हुआ, जिन्हें हम कल्प सूत्र कहते हैं। इसका अर्थ है—वेद में विहित कर्मों को क्रमशः व्यवस्थित कल्पना करनेवाला शास्त्र।

कल्पो वेदविहितानां कर्मणामानुपूर्व्येण कल्पनाशास्त्रम्।

ऋग्वेद के दो श्रौत और गृह्यसूत्र हैं— आश्वलायन तथा शाखायन। एक कौषीतकि गृह्यसूत्र भी प्रकाशित है किन्तु श्रौतसूत्र प्राप्त नहीं हुआ है। शुक्ल यजुर्वेद के कात्यायनश्रौतसूत्र तथा पारस्कर गृह्यसूत्र प्रसिद्ध हैं। कृष्ण-यजुर्वेद से सम्बद्ध कल्पसूत्र हैं— बौधायन, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशी, वैखानस, भारद्वाज तथा मानव इनमें अधिकांश प्राप्त हैं। सामवेद के कल्पसूत्र हैं—आर्षेय-कल्पसूत्र; लाटघायन, द्राह्मायण तथा जेमिनीय श्रौतसूत्र; गोभिल, खदिर तथा जैमिनीय-गृह्यसूत्र। अथर्ववेद के बेनान-श्रौतसूत्र तथा कौशिक गृह्यसूत्र मिले हैं। धर्मसूत्रों में गौतम (साम); बौधायन, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशी (कृष्ण यजुः); वसिष्ठ और विष्णु (ऋग्) उल्लेखनीय हैं।

शिक्षा की भाँति ही ये प्रत्येक वेद और शाखा के लिए अलग-अलग हैं। ये तीन प्रकार के है

श्रौत सूत्र—श्रौतसूत्र जिनमें प्रतिपादित पूर्णमास आदि विविध यज्ञों का विधान किया गया है। वस्तुतः कल्पसूत्रों के ये ही पुष्ट अङ्ग हैं। वैदिक यज्ञों का

वर्णन—अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, चातुर्मास्य आदि का वर्णन। आश्वलायन, कात्यायन, बौधायन, मानव आदि श्रौत सूत्र ग्रंथ।

गृह्य सूत्र—गृह्यसूत्र जिनमें गृह्याग्नि में होनेवाले यज्ञों तथा विवाह, श्राद्ध आदि संस्कारों का वर्णन है। गृह्य अग्नि यज्ञों का वर्णन—उपनयन, विवाह, अंत्येष्टि आदि का वर्णन। आश्वलायन, गौतम, दक्ष, कात्यायन, पारस्कर गृह्य सूत्र ग्रंथ।

धर्म सूत्र—धर्मसूत्र जिनमें चारों वर्णों तथा आश्रमों के कर्तव्य निर्दिष्ट हैं। मनु आदि की स्मृतियों के ये ही स्रोत हैं तथा हिन्दुओं के कानून भी ये ही हैं। चार आश्रम, चार वर्ण एवं राजा आदि के कर्तव्यों का वर्णन। आपस्तम्ब, अंगिरा, वसिष्ठ आदि धर्म सूत्र ग्रन्थ एवं नारद, अत्रि, वशिष्ठ, यम, बृहस्पति, उशना, भृगु, पराशर, मनु आदि के स्मृति ग्रन्थ।

शुल्ब सूत्र—कल्प का एक चौथा प्रकार शुल्वसूत्र हैं जिसमें यज्ञवेदिका का निर्माण प्रकार वर्णित है जिसका रेखागणित से पूरा सम्बन्ध है। यज्ञवेदी के निर्माण, आकार, वृत्त, त्रिकोण, चतुर्भुज, पंचकोण का क्षेत्रफल, त्रिज्या, व्यास, कर्ण आदि गणितीय और भूमितीय अवधारणाओं का वर्णन। बोधायन, आपस्तम्ब, कात्यायन, मानव, मैत्रायन, वाराह, वधुला आदि।

(3) **व्याकरण**—वैदिक साहित्य में आनेवाले शब्दों का निर्माण, उनकी शुद्धता आदि का अध्ययन प्रकृति और प्रत्यय के सम्बन्ध द्वारा व्याकरण ही करता है। व्याकरण का निर्देश तो ऋग्वेद-काल से ही मिलने लगता है किन्तु तैत्तिरीयसंहिता (6।4।7।3) में व्याकरण की उत्पति की कथा दी हुई है। इन्द्र के द्वारा वाणी व्याकृत (प्रकृति-प्रत्यय-विच्छिन्न) हुई, अतएव इन्द्र ही आदि वैयाकरण हैं। व्याकरण के कई पारिभाषिक शब्द हमें गोपथ-ब्राह्मण (1924) में भी मिलते हैं। इस प्रकार के छिटपुट व्याकरण यास्क के निरुक्त-काल तक लिखे गये। व्याकरण के प्रथम परिपूर्ण आचार्य पाणिनि ने ही दस प्राचीन आचार्यों के नाम गिनाये हैं जिसमें कितने तो यास्क से भी प्राचीन हैं। पाणिनि (समय 500 ई. पू.) ने अपनी अष्टाध्यायी के द्वारा तात्कालिक भाषा को संयत किया। स्थान-स्थान पर वैदिक व्याकरण के विषय में भी कुछ संकेत किया किन्तु वह संकेतमात्र था। वस्तुतः वैदिक भाषा का सर्वांगीर्ण व्याकरण अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ। पाणिनि के अलावे दूसरे प्रकार के कई वैयाकरण हुए हैं किन्तु इनके नियमों से आगे बढ़कर लिखनेवाला कोई नहीं हुआ।

महेश्वर, ब्रह्मा, इंद्र, भृगु, उशना, बृहस्पति, मधुच्छन्द, कुत्स, असित, वाक्, मैत्रेयी, मेधा, क्रोष्टकी, औदुम्बरायण, अग्रायण, अरुणाभ, औपमन्यव, गार्ग्य, गालव, काडक्य, कौत्स्य, चर्मशिरस, तैत्तिक, मौद्गल्य, वार्ष्यायणि, शाकल्य, शतबलाक्ष्य,

मध्यंदिन, शाकटायन, स्फोटायन, शाकपूर्णी, स्थौलस्थिवन, यास्क, आपिलाशी, काश्यप, भारद्वाज, पाणिनी, पतंजली, कात्यायन, वररुचि, बोपदेव आदि के व्याकरणिक ग्रन्थ। आचार्य पाणिनी मुनि की 'अष्टाध्यायी' सुप्रसिद्ध है। पाणिनि (अष्टाध्यायी), कात्यायन (वार्तिक) तथा पतञ्जलि (महाभाष्य)—इन तीनों को मिलाकर 'त्रिमुनि' व्याकरण कहते हैं और इन आचार्यों की प्रामाणिकता भी उत्तरोत्तर अधिक है।

(4) **छन्द**—वेद के मन्त्रों के उच्चारण के लिए छन्दों का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि वैदिक संहिताओं का अधिकांश भाग छन्दोबद्ध है। मुख्य छन्दों के नाम तो हमें संहिताओं और ब्राह्मणों में ही मिलने लगते हैं, जिससे इस अङ्ग की प्राचीनता सिद्ध होती है, किन्तु इसका प्रतिनिधि-ग्रन्थ है पिङ्गलाचार्यकृत छन्दसूत्र, जिसके प्रथम चार अध्यायों में वैदिक छन्दों का वर्णन है। छन्द का अर्थ है आवरण अर्थात् जो शब्दों का आवरण हो। पीछे सामान्य रूप से वेदों के लिए 'छन्द' शब्द का प्रयोग होने लगा जैसा कि पाणिनि अपनी अष्टाध्यायी में 'बहु छन्दसि' का प्रयोग करते हैं। चूंकि वैदिक छन्दों में सामान्य नियम का अभाव है इसलिए व्याकरण के अनियमित तथा असंगत प्रयोगों को छान्दस अथवा आ-प्रयोग कहते हैं। गुरु-लघु की गणना से रहित, केवल अक्षरों की गणना पर ही वैदिक छन्द आधारित हैं। यास्क ने सप्तम अध्याय में छन्दों का निर्वाचन किया है। ये प्रधान वैदिक छन्द हैं—गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् तथा। इन छन्दों से ही कतिपय लौकिक छन्दों का विकास हुआ।

(5) **ज्योतिष**—मन्त्र के सम्पादन करने का विशिष्ट समय जानने के लिए ज्योतिष की नितान्त आवश्यकता है। दिन, रात, ऋतु, मास, नक्षत्र, वर्ष आदि का ज्ञान बिना ज्योतिष के हो ही नहीं सकता। यह जीवन से इतना सम्बन्ध है कि अनजाने ही हम 'रात' 'दिन'—जैसे ज्योतिष के ही शब्दों का प्रयोग करते हूँ। वैदिक संहिताओं में ही काल के अनेक विभागों का वर्णन उपलब्ध होता है। ऋतुओं के नाम से वर्ष का बोध होता था जैसे—शरदः शतम् सौ शरद तक (सौ वर्ष तक)। यहाँ तक कि हमारा सुपरिचित 'वर्ष' भी वर्षा ऋतु के नाम पर ही बना है। 'वसन्ते ब्राह्मणोऽग्निमादधीत, ग्रीष्मे राजन्य आदधीत, शरदि आधी' (ते. प्रा.1।1।1) तथा 'प्रातः जुहोति, सायं जुहोति' (2। 1। 2)।

महर्षि लगाध रचित वेदाङ्ग ज्योतिष नाम का ग्रन्थ ही इसका प्रतिनिधित्व करता है, जो ऋग्वेद और यजुर्वेद से सम्बद्ध है। इसमें श्लोकों में तात्कालिक ज्योतिषविद्या का वर्णन है। आर्च ज्योतिष—ऋग्वेद संबंधी 36 श्लोक और याजुष ज्योतिष—यजुर्वेद संबंधी 43 श्लोक युक्त ग्रन्थ। पीछे के ग्रन्थ भी ज्योतिर्विद्या के

अमूल्य रत्न हैं जैसे—आर्यभट्टीय। यह एक अङ्गगणित है जिसे पूर्वकाल में बहुत ही महत्त्व रहा है।

(6) **निरुक्त**—वेदाङ्गों में चौथा स्थान पाने पर भी अपनी कई विशेषतायें रखता है। इसमें मुख्यतया वैदिक शब्दों के अर्थ जानने की प्रक्रिया बताई जाती है, जैसा कि सायणाचार्य ने अपने ऋग्वेद-भाष्य की भूमिका में 'अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तन्निरुक्तम्।' अर्थात् अर्थ की जानकारी की दृष्टि से स्वतंत्र रूप से जहाँ पदों का संग्रह किया जाता है वही निरुक्त है। अर्थज्ञान के लिए स्वतंत्र रूप से अपनी कई अर्थ जानने की प्रक्रिया, जहाँ पदों को समूह कहा गया है, जिससे अर्थावगम में बड़ी सहायता मिलती है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि अन्य वेदाङ्ग जहाँ वेद के बहिरंग से सम्बन्धि हैं वहीं निरुक्त का सम्बन्ध अंतरंग से है। स्वयं निघण्टु-नामक ग्रंथ वैदिक-कोश का भाष्य है तथा यास्क का लिखा हुआ है। निघण्टु में शब्द केवल गिना दिये गये हैं जो प्रायः अमरकोश की शैली में है। इन्हीं शब्दों पर यास्क ने अपना विशेष ध्यान रखा है तथा उनके अर्थ तक पहुँचने की चेष्टा की है। अर्थज्ञान के लिए वे उस शब्द से सम्बद्ध धातु तथा उसके अर्थ का आश्रय लेते हैं। यह निरुक्त की आधारशिला है। निघण्टु के पाँच अध्यायों की व्याख्या यास्क ने बारह अध्यायों में की है तथा पीछे दो अध्याय परिशिष्ट के रूप में जोड़े गये हैं। अन्य वेदाङ्ग जिस प्रकार प्रत्येक वैदिक शाखा के अलग-अलग हैं, उसी प्रकार यह अनुमान किया जाता है कि निरुक्त भी अलग-अलग होंगे। जैसे आग्रायण, औपमन्यव, औदुम्बरायण, शाकपूर्णी, गार्ग्य, और्णवाभ, काटठक्य, गालव, वार्ष्यायणि आदि निरुक्तकार। किन्तु सर्वाधिक प्रसिद्ध निरुक्तकार यास्क—निघंटु (वैदिक शब्दकोश—1341 शब्द) और निरुक्त (वैदिक व्युत्पत्तिशास्त्र) में 230 वैदिक शब्दों का निर्वचन किया है।

वेदों के उपांग—इन्हें ही आस्तिक दर्शन भी कहा जाता है।

1) **मीमांसा (पूर्वमीमांसा) दर्शन**—महर्षि जैमिनी रचित मीमांसा में धर्म तत्त्व का वर्णन किया है। इस ग्रन्थ में 12 अध्याय और 2731 सूत्र हैं। इस पर शबरस्वामी का भाष्य प्रसिद्ध है। कुमारिल भट्ट, मंडन मिश्र और मुरारी मिश्र अन्य व्याख्याकार हैं। कुमारिल भट्ट रचित श्लोक वार्तिक, तंत्र वार्तिक और टुपटीका तथा मध्वाचार्य रचित जैमिनीय न्यायमाला विस्तार ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण हैं।

2) **न्याय दर्शन**—महर्षि गौतम (अक्षपाद) रचित न्यायसूत्र इस ग्रन्थ में प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टांत, सिद्धांत, अवयव, तर्क, निर्णय, वात, जल्प, वितंडा, हेत्वाभाव, छल, जाति और निग्रह स्थान आदि सोलह पदार्थों के विवेचन द्वारा निरूश्रेयस

की उपलब्धि की वर्णन किया गया है। न्याय सूत्र के व्याख्याकारों में वात्स्यायन, उद्योतकर, वाचस्पति मिश्र, उदयनाचार्य, भासर्वज्ञ, जयंत और गणेश महत्त्वपूर्ण हैं।

3) **वैशेषिक दर्शन**–महर्षि कणाद रचित वैशेषिक दर्शन में इस संसार की रचना के साधारण कारण, उपादान कारण और निमित्त कारण का वर्णन किया है। प्रशस्तिपाद, उदयनाचार्य, श्रीधराचार्य, व्योमशिवाचार्य, वत्साचार्य, पद्मनाभ, जगदीश, मल्लिनाथ, शंकर मिश्र आदि ने इस दर्शन पर टीकाएँ लिखीं। तर्क इस दर्शन का मूल है। द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, समवाय और आभाव पर विशेष चिंतन प्रस्तुत किया गया है।

4) **सांख्य दर्शन**–महर्षि कपिल रचित इस दर्शन में आत्मा और अविद्या का सूक्ष्म विवेचन किया गया है। तेईस तत्त्वों–पुरुष, प्रकृति, पंच तन्मात्रा, पंच महाभूत, पंच ज्ञानेन्द्रियाँ, पंच कर्मेन्द्रियाँ, महत, बुद्धि, अहंकार आदि का वर्णन किया है। आसुरी, पंचशिख, विंध्यवास, जैगीषण्य, ईश्वर कृष्ण, विज्ञान भिक्षु, वाचस्पति मिश्र जैसे व्याख्याकार हुए हैं।

5) **योग दर्शन**–महर्षि पतंजलि रचित योग सूत्र ग्रन्थ में 194 सूत्रों को चार पादों में अर्थात समाधि पाद, साधन पाद, विभूति पाद और कैवल्य पाद में वर्गीकृत किया गया है। इन सूत्रों में अष्टांग योग–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का वर्णन किया गया है। साथ ही चित्त की पाँच वृत्तियाँ–प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति, पाँच प्रवृत्तियाँ–क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, निरुद्ध, एकाग्र आदि का वर्णन किया गया है। योग दर्शन पर व्यास रचित भाष्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण टीका है।

6) **वेदान्त (ब्रह्मसूत्र /उत्तर मीमांसा) दर्शन**–महर्षि वेदव्यास रचित इस दर्शन में 4 अध्यायों में 555 सूत्रों का वर्गीकरण किया गया है। इसका मुख्य विषय ब्रह्म को जानना है। वेदांत दर्शन पर आद्य शंकराचार्य ने अद्वैतवादी, रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैतवादी, मध्वाचार्य ने द्वैतवादी, वल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैतवादी, निम्बर्काचार्य ने द्वैताद्वैतवादी टीकाएँ लिखी हैं।

यद्यपि यह सत्य है कि हमारे ऋषि-मुनियों द्वारा सांगोपांग वैदिक वाङ्मय का विवेचन किया गया है। किन्तु समय के साथ सांगोपांग वैदिक वाङ्मय का आधुनिक दृष्टिकोण के अध्ययन करना भी नितांत आवश्यक है। जैसे–वैदिक भाषा और लिपि, वैदिक अंक विद्या और गणित, वैदिक काल गणना और ज्योतिष, वैदिक शिक्षा और गुरुकुल पद्धति, वैदिक विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी, वैदिक संगीत एवं नाट्य कला, वैदिक चिकित्सा पद्धति–योग और आयुर्वेद, वैदिक कृषि और

उद्योग, वैदिक शिल्प विद्या एवं स्थापत्य कला, वैदिक कला वैभव, वैदिक संस्कृति एवं पर्यावरण, वैदिक लोक व्यवस्था, वैदिक पर्व एवं त्योहार, वैदिक सोलह संस्कार, वैदिक आश्रम व्यवस्था, वैदिक वर्ण व्यवस्था, वैदिक अर्थ चिंतन और आधुनिक अर्थशास्त्र, वैदिक राजनीति एवं दंड विधान और आधुनिक राजनीतिशास्त्र, वैदिक समाज व्यवस्था और आधुनिक समाजशास्त्र, वैदिक मनोविज्ञान और आधुनिक मनोविश्लेषण शास्त्र, वैदिक पंचकोश विज्ञान और आधुनिक शारीरिक अंतर्रचना, वैदिक व्याकरण एवं आधुनिक भाषा विज्ञान, वैदिक ज्ञान परम्परा और आधुनिक विज्ञान, वैदिक दार्शनिक चिंतन और आधुनिक दर्शनशास्त्र, वैदिक इतिहास दर्शन और आधुनिक इतिहास दर्शन, वैदिक नीतिशास्त्र और आधुनिक विधिशास्त्र, वैदिक रसायन शास्त्र और आधुनिक रसायन शास्त्र, वैदिक भौतविद्या और आधुनिक भौतिकशास्त्र आदि।

संदर्भ-ग्रन्थ :

1) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका—महर्षि दयानंद सरस्वती, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, अजमेर
2) वैदिक वाङ्मय का इतिहास (भाग 1 अपौरुषेय वेद तथा शाखा)—पं. भगवदत्त, रामलाल कपूर ट्रस्ट, अमृतसर
3) वैदिक वाङ्मय का इतिहास (भाग 2 वेदों के भाष्यकार)—पं. भगवदत्त, रामलाल कपूर ट्रस्ट, अमृतसर
4) वैदिक वाङ्मय का इतिहास (भाग 3 ब्राह्मण और आरण्यक)—पं. भगवदत्त, रामलाल कपूर ट्रस्ट, अमृतसर
5) भाषा का इतिहास—पं. भगवदत्त, विजयकुमार गोविन्दराम हसानंद, दिल्ली (2012)
6) संस्कृत साहित्येतिहासः—आचार्य लोकमणि दाहल कृष्ण दास अकादमी, वाराणसी (1993)
7) संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास—डॉ. सत्यनारायण पाण्डेय एवं डॉ. श्रीकांत पाण्डेय, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ (सप्तम संस्करण)
8) संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास—डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, राम नारायण लाल विजयकुमार, इलाहाबाद (2016)
9) अर्थ विज्ञान एवं व्याकरण दर्शन—डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी (2000)
10) वैदिक साहित्य और संस्कृति—डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी (2002)

11) भाषाविज्ञान तथा भाषाशास्त्र–डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी (2003)
12) पाणिनी कालीन भारतवर्ष–डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी (1955)
13) वैदिक संपत्ति–पं. रघुनन्दन शर्मा, आध्यात्मिक शोध संस्थान, नयी दिल्ली
14) अक्षर विज्ञान–पं. रघुनन्दन शर्मा, आध्यात्मिक शोध संस्थान, नयी दिल्ली
15) संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास (भाग 1,2,3)–पं. युधिष्ठिर मीमांसक, रामलाल कपूर ट्रस्ट, अमृतसर
16) रामायण भ्रांतियाँ और समाधान–स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, आर्य प्रकाशन मंडल (1994)
17) भारतीय ज्ञान-परम्परा और विचारक–रजनीश कुमार शुक्ल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली (2022)
18) भारतीय ज्ञान परम्परा में पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी–प्रो. मीरा द्विवेदी, वेद ऋषि प्रकाशन, दिल्ली (2022)
19) भारतीय ज्ञान परम्परा : राखीगढ़ी विशेष सन्दर्भ में पुरातत्वशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य–डॉ. वसंत शिंदे, भीष्म प्रकाशन, पुणे (2022)
20) भारत वैभव–ओ३म प्रकाश पाण्डेय, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, वसंत कुंज, नयी दिल्ली (2022)
21) Introduction to Indian Knowledge System : Concept and Applications - B. Mahadevan, Vinayak Rajat Bhat, Nagendra Pavana R.N., PHI Learning Private Limited, Delhi (2022)

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय,
समर्थ नगर, सांजा मार्ग,
उस्मानाबाद–413501 (महाराष्ट्र)
मो. : 9270000721

प्रो. (डॉ.) जयंत कर शर्मा (1962) ने विश्व भारती, शांतिनिकेतन से हिंदी में स्नातकोत्तर तथा तुलनात्मक साहित्य में पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। डॉ. शर्मा के पास अड़तीस वर्षों से अधिक का शिक्षण और अनुसंधान का अनुभव है। इन्हें इस अवधि के दौरान परीक्षा नियंत्रक और वित्त नियंत्रक के अतिरिक्त ओडिशा राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, संबलपुर के प्रथम रजिस्ट्रार के रूप में नियुक्त किया गया था। इनकी सात पुस्तकें प्रकाशित हैं। विभिन्न भाषाओं में बारह पुस्तकों और कई पत्रिकाओं का संपादन भी इन्होंने किया है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं और पुस्तकों में अस्सी से अधिक शोध-पत्र और अध्याय प्रकाशित हैं। इन्होंने संत कवि भीम भोई कृत 'स्तुति चिन्तामणि' व बलराम दास कृत 'लक्ष्मी पुराण' के साथ-साथ कई पुरस्कृत कृतियों का भी हिन्दी में अनुवाद किया है। इन्हें कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा गया है।

संपर्क :

डॉ. जयंत कर शर्मा, (संस्थापक कुलसचिव, ओएसओयू), सेवानिवृत्त हिंदी के प्रोफेसर। 201 शिवा एन्क्लेव, गंगाधर मेहेर विश्वविद्यालय रोड संबलपुर-768001, उड़ीसा।

मोबाइल : +91-9861168455

ईमेल : jayantakarsharma@gmail.com

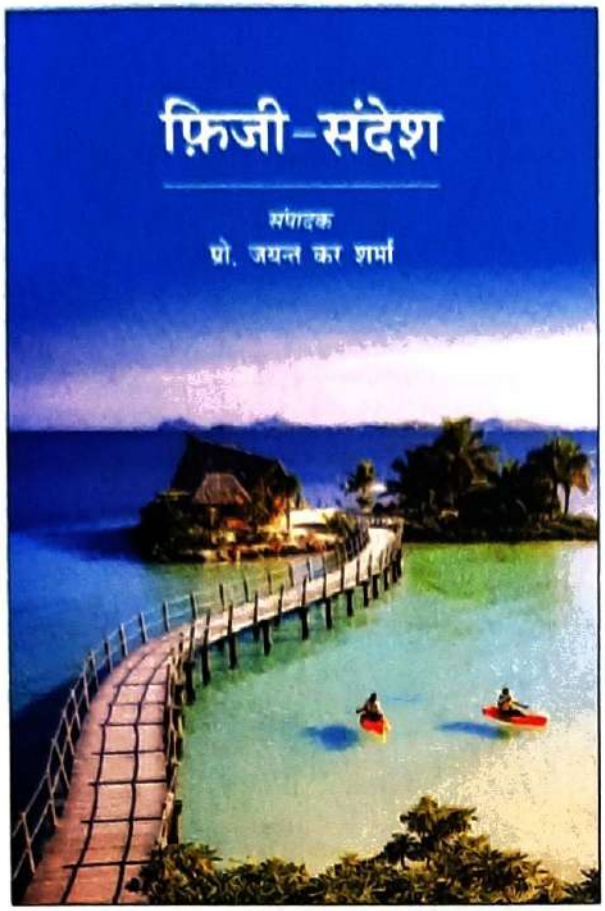

प्रज्ञा भारती
प्रज्ञा भारती
दिल्ली-110032

आलोचना
ISBN 978-81-960947-3-7
₹ 450/-